ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.20, No.1, Jan. – Mar., 2025/11

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं प्रवास : एक समाजशास्त्रीय दृष्टि

विजय कुमार शुक्ल,
https://doi.org/ 10.61410/ had.v20i1.221

परिचय –

समाजशास्त्रियों के लिए प्रवास का अध्ययन हमेशा से महत्वपूर्ण रहा है। उत्तर आधुनिक समाज में प्रवास और अधिक प्रासंगिक हो गया है, क्योंकि आज अंग्रेजी ने पूरे विश्व के लोगों को भाषाई तौर पर एक कर दिया है जिससे लोग एक देश से दूसरे देश में आसानी से आ – जा सकते हैं। दूसरे शब्दों में अंग्रेजी ने वैश्विक भाषा का रूप ले लिया है। यह सब प्रवासियों के आगमन एवं निर्गमन के कारण संभव हो सका है।

प्रवास के सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों परिणाम होते हैं। प्रवास परंपरागत समाज से लेकर उत्तर आधुनिक समाज में हो रहा है। प्रवास के कारण जहां दो संस्कृतियों का मिलन होता है तो कहीं पर प्रवासी संस्कृत मूल निवासियों के संस्कृति को ही खत्म कर देती है। कुछ देश जैसे अमेरिका अवैध प्रवास का विरोध कर रहा है। 5 फरवरी 2025 को अमेरिका ने 104 भारतीयों को जो डंकी रूट के जरिए अमेरिका में अवैध रूप से घुसे थे उनको निर्वासित कर दिया है।

भारतीय समाजशास्त्रियों के लिए सामान्य ज्ञान परंपरा और प्रवास विषय पर अध्ययन बहुत रुचि कर रहा है। प्रवासियों में मुख्य रूप से इस्लाम तथा अंग्रेजों के सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव का अध्ययन अब तक किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में सांख्य एवं योग, मीशांसा एवं वेदांत, वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, खगोल, आयुर्वेद तथा दर्शन, विज्ञान, व्यावहारिक ज्ञान साहित्य, उपनिषद् आदि आते हैं। जबकि प्रवास वह प्रक्रिया है जिसमें कोई व्यक्ति या समूह किसी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, एवं शैक्षिक उद्देश्यों से अपने मूल स्थान से गंतव्य स्थान को जाता है।

साहित्य समीक्षा –

भारत में सामान्य ज्ञान परंपरा और इस्लाम तथा अंग्रेजों के प्रभाव पर बहुत अध्ययन हुए हैं जिसमें से कुछ निम्न है –

1 – सिंह योगेंद्र : मॉडर्नाइजेशन आफ इंडियन ट्रेडीशन – इस पुस्तक से यह पता चलता है कि इस्लामी शासनकाल में कुछ मुस्लिम शासको ने हिंदू मंदिरों को नष्ट करने, इस्लाम का प्रचार प्रसार करने तथा उन्हें मुसलमान बनाने की नीति अपनाई। इस काल में संघर्ष और तनाव के साथ ही साथ अनुकूलन और परंपराओं के सांस्कृतिक समन्वय को भी बढ़ावा मिला। अंग्रेजों के कारण हिंदुओं में सामाजिक सुधार आंदोलन को बढ़ावा मिला।

2 – श्रीनिवास एम. एन. : सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया, वैर्कले : युनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1966 – इस पुस्तक के अध्ययन से शोधार्थी को पता चला कि भारत में ब्रिटिश शासन का हिंदू परंपराओं पर क्या प्रभाव पड़ा है ?

अध्ययन का उद्देश्य –

इस शोध पत्र के निम्न उद्देश्य हैं –

1– भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2– सामान्य ज्ञान परंपरा तथा प्रवास के संबंधों का विवेचन करना।

• **सहायक आचार्य – समाजशास्त्र विभाग ,गन्ना उत्पादक स्नातकोत्तर महाविद्यालय बहेड़ी, बरेली**

3 – भारतीय ज्ञान परंपरा किस समृद्धि में प्रवासियों की भूमिका का आकलन करना।

अध्ययन की उपकल्पना – प्रस्तुत शोध पत्र को निम्न उपकल्पनाओं द्वारा परिसीमित किया गया है–

1– प्रवासी परंपराओं ने भारतीय ज्ञान परंपरा को काफी छत पहुंचाई है।

2– वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुद्धार को बढ़ावा मिल रहा है।

3 – वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा का अन्य देशों में तेजी से प्रचार – प्रसार हो रहा है।

अध्ययन की शोध प्रविधि –

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राथमिक एवं द्वितीय स्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों के लिए आसपास के प्रवासियों से हुए साक्षात्कार को सम्मिलित करते हुए शुद्ध पत्र को तैयार किया गया है। साथ ही कुछ प्रसिद्ध इतिहास का तथा समाजशास्त्रियों से साक्षात्कार भी लिया गया है। शोधकर्ता ने आनुभविक अध्ययन के द्वारा भी तथ्यों को एकत्र किया है।

अध्ययन का विश्लेषण –

समाजशास्त्री योगेंद्र सिंह ने चार सोपानो का उल्लेख किया है – 1– भूमिका संस्थान (वर्ण) 2– करिश्माई प्रतिभा (गुण) 3 – उद्देश्य – अभिविन्यास (पुरुषार्थ) 4 – जीवन अवस्थाएं व मूल्य बंधन (आश्रम) ।

712 ईस्वी में मोहम्मद बिन कासिम सिंधु पर हमला करके राजा दाहिर को शिकस्त दी। इसके बाद धीरे–धीरे इस्लामी परंपरा से भारतीय ज्ञान परंपरा के बीच संघर्ष हुआ।

योगेंद्र सिंह के अनुसार इस्लामी परंपराओं की तीन प्रमुख अवस्थाएं हैं : 1– भारत में इस्लाम शासन की अवधि 2 – ब्रिटिश राजपथ के दौरान 3 – भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और भारत की स्वतंत्रता तथा देश के विभाजन की अवधि में भारत में इस्लामिक शासन की अवधि के दौरान राजनीतिक अस्थिरता आ गई। इस काल में आक्रमणकारियों ने बड़े–बड़े पुस्तकालय व संग्रहालयों को लूट लिया। आयुर्वेद की कई पुस्तकें जैसे चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, अष्टांगहृदय आदि का अरबी एवं फारसी में अनुवाद कराया गया। नालंदा विश्वविद्यालय जिसकी स्थापना कुमार गुप्त ने 413 ईस्वी में की थी जहां पर चीनी यात्री हुए ह्वेनसांग तथा फाह्यान ने शिक्षा ग्रहण किया था, उसे बख्तियार खिलजी के द्वारा 1193 ईस्वी में जलाकर नष्ट कर दिया गया। इसी प्रकार विक्रमशिला महाविद्यालय का विनाश भी बख्तियार खिलजी द्वारा 1203 ईस्वी में किया गया था।

संस्कृति की अपेक्षा फारसी को अधिक महत्व मिलने लगा था। उसे समय यह कहावत प्रसिद्ध हो गई थी – पढ़ें फारसी बेचे तेल, देखो यह कुदरत का खेल।

उसे समय वर्ण व्यवस्था का स्थान जाति व्यवस्था ने ले लिया था। आश्रम व्यवस्था खत्म हो गई थी। हिंदू परंपरा में जो महिलाओं को सम्मान मिलता था उसका स्थान महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार ने ले लिया था। विवाह रात में होने लगे, लड़कियों को पढ़ाना बंद कर दिया गया था।

एच.पी. श्रीनिवास मूर्ति और यश.यू. कामथ ने भारतीय समाज पर इस्लाम के प्रभाव के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उनके अनुसार हिंदू समाज को घोर जातिवादी और अन्य बनाने में इस्लाम परोक्ष रूप से उत्तरदायी है। हिंदू स्त्रियों में पर्दा प्रथा लाई गई और सती प्रथा को अधिक कठोर बनाया गया। बाल विवाह अधिक जनप्रिय हुए।

बाद की अवधि में भारतीय तथा इस्लामी दोनों परंपराओं का संश्लेषण हुआ। हिंदू तथा मुस्लिम दोनों ने मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष किया। एक नई भाषा उर्दू का विकास हुआ। बाद में हिंदी हिंदुओं की तथा उर्दू मुसलमानों की भाषा मानी जाने लगी। आज भी हिंदू उर्दू बहुत ही काम पढ़ते हैं।

1600 ईस्वी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना तथा 1608 में सर्वप्रथम अंग्रेजों का सूरत बंदरगाह पर आगमन से लेकर सन 1907 तक ब्रिटिश परंपरा तथा भारतीय परंपरा में संघर्ष था समन्वय हुआ।

एम.एन. श्रीनिवास के अनुसार अंग्रेजों के संपर्क में आने के कारण वेशभूषा, खान–पान और लोगों की जीवन शैलियों में परिवर्तन आया है। पश्चिमीकरण के कारण संस्कृति तथा हिंदी की अपेक्षा अंग्रेजी को अधिक महत्व मिला। आयुर्वेद के स्थान पर एलोपैथिक दावों को प्राथमिकता दी जाने लगी। खानपान में भी परिवर्तन आया है। अब शाकाहारी के स्थान पर मांसाहारी का प्रयोग अधिक बढ़ गया है। छाछ का स्थान चाय ने ले लिया है। गांव में विवाह इत्यादि कार्यक्रम में भी बुफे व्यवस्था का प्रचलन होने लगा है। सोहर, चौताल, कजरी आदि परंपराओं में कमी दिखाई देने लगी है।

इसके विपरीत अब भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनरुद्धार की प्रक्रिया भी चल रही है। आयुर्वेद के पंचकर्म का प्रचार प्रसार हो रहा है। 21 जून को योग दिवस पूरे विश्व में मनाया जा रहा है। इसमें भारतीय प्रवासियों की बहुत बड़ी भूमिका है। भोजपुरी में पिक्चर भी बनाई जा रही है। लोक परंपरागत खान–पान को प्राथमिकता देने लगे हैं। वेद पुराण का स्थान भले ही विज्ञान ने ले लिया है लेकिन राम मंदिर बन जाने से प्राचीन परंपरा को मजबूती मिली है।

निष्कर्ष –

प्रवासियों के कारण भारतीय परंपरा के भजन – भोजन, भाषा – भूषा, भवन – भ्रमण में भारतीय और इस्लामी तथा ब्रिटिश परंपरा का समन्वय देखने को मिल रहा है। मुसलमानों में परंपरा पर अधिक जोर देने के कारण सांप्रदायिक दंगे को अधिक बढ़ावा मिल रहा है। एक तरफ तमिलनाडु में हिंदी का विरोध हो रहा है तो दूसरी तरफ अरुणाचल प्रदेश में अभिनेत्री चुम दरांग ने कहा कि यहां पर 100 से अधिक जनजातीय हैं और हर जनजाति की अपनी–अपनी भाषाएं हैं इन सभी को जोड़ने का काम हिंदी करती है। हिंदी के माध्यम से ही आपस में संवाद और एकता बनाए रखने में मदद मिलती है।

संदर्भ सूची –

1 – शर्मा के.एल. : भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2010

2 – आहूजा राम : भारतीय समाज, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2009

3 –हसनैन नदीमः समकालीन भारतीय समाज : एक समाजशास्त्रीय परिदृश्य, भारत बुक सेंटर, लखनऊ, 2005

4 – सिंह देवराज : अनमोल हमारी थाती है (भारत का गौरवशाली इतिहास व परंपरा), सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 2023

5 – श्रीनिवास एम.एन. : सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया, वर्कले : यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1966

6 – सिंह योगेंद्र : मॉडर्नाइजेशन आफ इंडियन ट्रेडीशन, थॉमसन प्रेस, नई दिल्ली, 1973